BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

देश की धरती से वैश्विक बाजारों तक फूलों का सफर

"भारत के फूलों की खेती की अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी"

23 नवम्बर, 2026

*भारत में फूलों की खेती का क्षेत्र बागवानी के एक गतिशील हिस्से के रूप में उभरा है। इसे अनुकूल कृषि-जलवायु परिस्थितियों, सांस्कृतिक मांग और बढ़ते व्यावसायिक उपयोगों से प्रोत्साहन मिल रहा है। वर्ष 2025-26 के तृतीय अग्रिम अनुमानों के अनुसार, फूलों की खेती का क्षेत्रफल **4.1 लाख हेक्टेयर** रहा और फूलों का उत्पादन **48.82 लाख टन** हुआ, जिसमें देश में उत्पादन के मामले में आंध्र प्रदेश अग्रणी रहा। निर्यात में भी वृद्धि दर्ज की गई है। यह वित्त **वर्ष 2021-22 के 216.74 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2025-26 में 258.26 मिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया, जो अंतरराष्ट्रीय मांग में वृद्धि को दर्शाता है। यह क्षेत्र धार्मिक, सजावटी, औद्योगिक और औषधीय बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ मूल्यवर्धित उत्पादन और निर्यात विविधीकरण के माध्यम से किसानों के लिए नए अवसर भी पैदा कर रहा है। बागवानी मिशनों, अनुसंधान संस्थानों, वित्तीय सहायता और निर्यात को सुगम बनाने के लिए सरकारी सहयोग से उत्पादन प्रणालियां सुदृढ़ हुई हैं। सीएसआईआर के नेतृत्व में की जा रही पहलों सहित वैज्ञानिक उपाय फसल विविधीकरण, क्षेत्रीय विशेषज्ञता और व्यापक बाजार पहुंच को बढ़ावा दे रहे हैं।*

फलने-फूलने वाले उद्योग की जड़ें

भारत असाधारण प्राकृतिक विविधता वाला देश है, जहां बर्फ से ढके पर्वतों और उपजाऊ मैदानों से लेकर शुष्क रेगिस्तानों और लंबी तटरेखाओं तक विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियां मौजूद हैं। यहां की विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियां विभिन्न क्षेत्रों और मौसमों में खिलने वाले अनेक प्रकार के फूलों की खेती के लिए अनुकूल हैं। भारत में फूलों के गहरे सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक महत्व के साथ मिलकर इन प्राकृतिक विशेषताओं ने फूलों की खेती के विकास को बढ़ावा दिया है।

इसकी आर्थिक और सौंदर्यपरक संभावनाओं को पहचानते हुए, सरकार ने **फूलों की खेती** को ***"उदीयमान उद्योग"*** के रूप में चिह्नित किया है। भारतीय कृषि में कभी अपेक्षाकृत सीमित दायरे वाला यह क्षेत्र

अब बागवानी क्षेत्र के एक गतिशील हिस्से के रूप में विकसित हो चुका है। यह क्षेत्र किसानों की आय, कृषि निर्यात और ग्रामीण उद्यमों के विकास में योगदान दे रहा है तथा आधुनिक खेती की पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपना रहा है। आज फूलों की खेती के अंतर्गत विविध प्रकार के उत्पाद, उत्पादन प्रणालियां और मूल्यवर्धित उपयोग शामिल हैं। उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग, बाजार के विस्तृत होते अवसर, नीतिगत सहयोग और तकनीकी प्रगति इस क्षेत्र की निरंतर वृद्धि को गति दे रहे हैं।

भारत के फूलों की अर्थव्यवस्था का विस्तृत अवलोकन

फूलों की खेती फूलों को उगाने की वह कला और विज्ञान है, जिसका उद्देश्य फूलों की गुणवत्ता और उनके सौंदर्यपूर्ण आकर्षण को उच्च स्तर तक पहुँचाना है। बागवानी की एक अभिन्न शाखा के रूप में, इसमें **रोपण से लेकर कटाई** तक फूलों और सजावटी फसलों की खेती शामिल है। इस क्षेत्र में बीज, कलम, बडिंग और ग्राफ्टिंग के माध्यम से रोपण सामग्री का उत्पादन भी किया जाता है। इसके अलावा, फूलों और फूलों से बने उत्पादों का विपणन भी फूलों की खेती के अंतर्गत आता है।

फूलों की खेती के अंतर्गत उत्पादों की श्रेणियां

खुले फूलों की कटाई लंबी डंठल के बिना की जाती है और इन्हें इसी रूप में बाजार में बेचा जाता है। आमतौर पर इनकी बिक्री वजन के आधार पर होती है और इनका उपयोग मुख्य रूप से मालाएं और गजरे बनाने में किया जाता है। **गेंदा और चमेली** इसके प्रमुख उदाहरण हैं।



मालाओं के रूप में खुले फूल बेचती खुदरा दुकान



गुलदस्तों के रूप में गुच्छों में बेचे जाने वाले कटे हुए फूल

कटे हुए फूलों को डंठल के साथ काटा और बेचा जाता है। इनका इस्तेमाल आमतौर पर गुलदस्तों और फूलदानों में सजावट के लिए किया जाता है। इनके प्रमुख उदाहरण हैं– **गुलाब, गेरबेरा, कार्नेशन, ऑर्किड और लिली**।

फूलों के अलावा, फूलों की खेती के अंतर्गत **कटे हुए पत्ते, गमलों में लगाए जाने वाले पौधे, क्यारियों में रोपे जाने वाले पौधे तथा सजावटी पौधरोपण सामग्री** भी शामिल हैं। इनमें पौधों को उगाने और पेड़-पौधे लगाकर जमीन के सौंदर्यीकरण के लिए उपयोग किए जाने वाले बीज भी शामिल हैं।

बाजार को आकार देने वाले फूल

भारत घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मांग के अनुरूप विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती करता है। प्रमुख किस्मों में शामिल हैं:

- **गुलाब: कर्नाटक** और **महाराष्ट्र** में बड़े पैमाने पर उगाए जाते हैं; इनका निर्यात मूल्य अधिक है।
- **गेंदा:** धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किया जाने वाला लोकप्रिय फूल है; इसकी खेती मुख्य रूप से **तमिलनाडु** और **मध्य प्रदेश** में बड़े पैमाने पर की जाती है।
- **कार्नेशन, गुलदाउदी और जरबेरा:** निर्यात के लिए नियंत्रित वातावरण में उगाए जाते हैं।
- **लिली और ऑर्किड: सिक्किम** और **मिजोरम** जैसे चुनिंदा क्षेत्रों में उगाए जाने वाले बेहतरीन फूल।

विदेशी फूलों की मांग में वृद्धि हुई है। **पूर्वोत्तर क्षेत्र में ऑर्किड और एन्थ्यूरियम** व्यावसायिक रूप से लाभकारी फसलें बनकर उभरे हैं। पेड़-पौधे लगाकर शहरी सौंदर्यीकरण, आयोजनों की सजावट और वेलनेस उद्योग में भी इन फूलों की लोकप्रियता बढ़ रही है।

खुले खेतों से संरक्षित खेतों तक

भारत में फूलों की खेती फसल की आवश्यकताओं के अनुसार खुले खेतों और ग्रीनहाउस जैसी संरक्षित कृषि प्रणालियों, दोनों के माध्यम से की जाती है। खुले खेतों में खेती आमतौर पर **गुलदाउदी, गुलाब, गैलार्डिया, लिली, गेंदा, एस्टर और रजनीगंधा** जैसी फसलों के लिए की जाती है।

गुणवत्तापूर्ण फूलों की बढ़ती मांग और वर्षभर उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता के कारण **ग्रीनहाउस जैसी संरक्षित खेती** को अधिकाधिक अपनाया जा रहा है। **ग्रीनहाउस** विशेष रूप से **जरबेरा और कार्नेशन** जैसी निर्यातोन्मुख फसलों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनके माध्यम से तापमान, आर्द्रता और खेती की अन्य परिस्थितियों को बेहतर ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है। इससे फूलों की गुणवत्ता में एकरूपता, उत्पादकता में वृद्धि और अंतरराष्ट्रीय बाजार के मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

गुलदस्तों के अलावा: फूलों की खेती के विविध उपयोग

भारत में फूलों का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है और वे सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परंपराओं से गहराई से जुड़े हुए हैं। इन पारंपरिक उपयोगों के अलावा, फूलों की खेती एक विविधतापूर्ण

क्षेत्र के रूप में विकसित हुई है, जिसका उपयोग इत्र निर्माण, सौंदर्य प्रसाधन और औषधि उद्योगों में भी निरंतर बढ़ रहा है।

<u>प्रमुख घरेलू उपयोग:</u>

- **धार्मिक एवं सामाजिक परंपराएं - चमेली, गेंदा और क्रॉसेंड्रा** जैसे फूलों का उपयोग पूजा-अर्चना, सामाजिक समारोहों और व्यक्तिगत सजावट में व्यापक रूप से किया जाता है।
- **जीवनशैली एवं सजावटी उपयोग** - बढ़ते शहरीकरण और खर्च योग्य आय में वृद्धि के कारण गुलदस्ते भेंट करने, आयोजन स्थलों की सजावट तथा आवासीय एवं व्यावसायिक परिसरों के सौंदर्यीकरण की मांग बढ़ी है।
- **इत्र एवं सौंदर्य प्रसाधन** - **चमेली, लैवेंडर और गुलाब की पंखुड़ियों** सहित विभिन्न फूलों का उपयोग सुगंधित एवं सौंदर्य प्रसाधन उत्पादों के निर्माण में कच्चे माल के रूप में किया जाता है।
- **औषधीय उपयोग** - **कैलेंडुला, गुड़हल और कैमोमाइल** जैसी पुष्पोत्पादन फसलों का उपयोग औषधीय उत्पादों के निर्माण में किया जाता है।
- **रंग और डाई निकालना** - **गेंदा और गुड़हल** का उपयोग प्राकृतिक रंग और डाई प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

भारत के पुष्प उत्पादक क्षेत्रों का मानचित्र

अनुकूल जलवायु परिस्थितियों और बाजार की बढ़ती मांग के सहयोग से देश के कई क्षेत्रों में फूलों की खेती का विस्तार हुआ है। वर्ष 2025-26 के तृतीय अग्रिम अनुमानों के अनुसार, फूलों की खेती के अंतर्गत कुल **4.1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र** शामिल था। इसी अवधि के दौरान **36.53 लाख टन खुले फूलों और 12.29 लाख टन कटे हुए फूलों** का उत्पादन हुआ। फूलों की खेती का कुल उत्पादन **48.82 लाख टन** रहा, जो भारत में इस क्षेत्र के व्यापक विस्तार और व्यावसायिक महत्व को दर्शाता है।

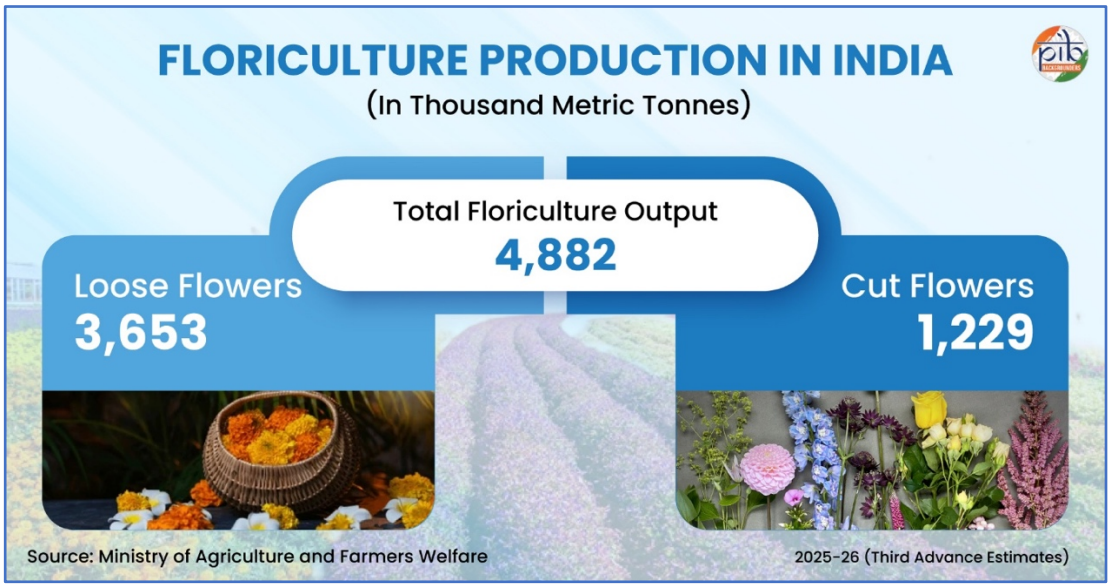

फूलों के उत्पादन को बढ़ावा देने वाले राज्य

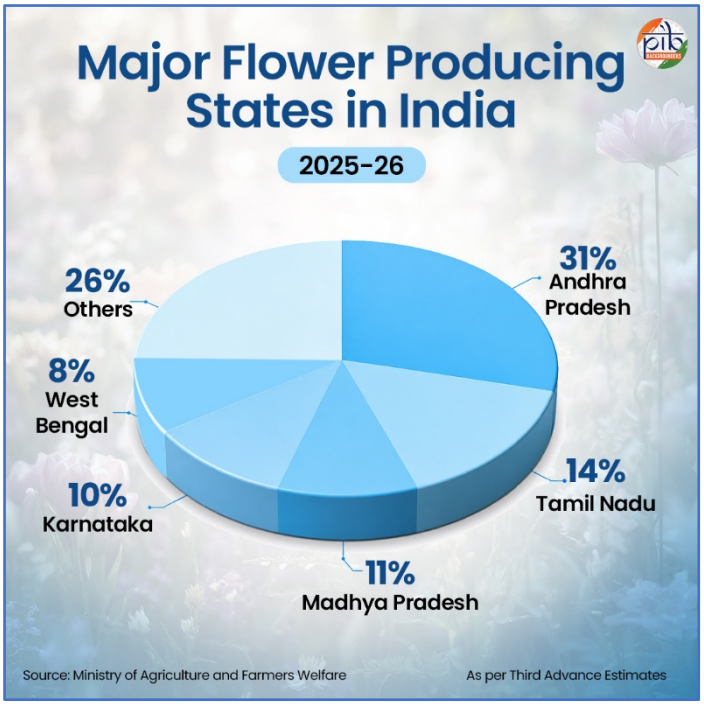

भारत में फूलों की खेती का अधिकांश हिस्सा कुछ प्रमुख राज्यों में केन्द्रित है। वर्ष 2025-26 के तृतीय अग्रिम अनुमानों के अनुसार, देश के कुल फूल उत्पादन में आंध्र प्रदेश का लगभग 31 प्रतिशत योगदान रहा। इसके बाद तमिलनाडु (14 प्रतिशत), मध्य प्रदेश (11 प्रतिशत), कर्नाटक (10 प्रतिशत) और पश्चिम बंगाल (8 प्रतिशत) का रहा। खेती करने वाले अन्य प्रमुख उत्पादक राज्यों में छत्तीसगढ़, गुजरात, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र और तेलंगाना शामिल हैं। भारत के कुल फूल उत्पादन में पूर्वोत्तर राज्यों का संयुक्त रूप से लगभग 4 प्रतिशत योगदान रहा। इनका असम के खुले और कटे हुए, दोनों प्रकार के फूलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके बाद विशेष रूप से कटे हुए फूलों के उत्पादन में नागालैंड का स्थान रहा। यह वितरण देशभर में पुष्पोत्पादन के व्यापक भौगोलिक विस्तार को दर्शाता है।

मजबूत उत्पादन आधार और खेती की विविध प्रणालियों ने भी अंतरराष्ट्रीय फूल व्यापार में भारत की बढ़ती उपस्थिति को समर्थन दिया है।

वैश्विक फूल बाजारों में भारत की बढ़ती उपस्थिति

फूलों की खेती मूल्यवर्धित कृषि निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और पारंपरिक फसलों की खेती के अतिरिक्त आय के अवसर प्रदान करता है। पिछले कुछ वर्षों में भारत के फूलों की खेती के निर्यात में स्पष्ट रूप से वृद्धि देखी गई है, जो भारतीय पुष्प उत्पादों के लिए बढ़ती अंतरराष्ट्रीय मांग का संकेत है। फूलों के निर्यात, जिसमें फलों और सब्जियों के बीज भी शामिल हैं, का मूल्य **वित्त वर्ष 2021-22 में 216.74 मिलियन अमेरिकी डॉलर** से बढ़कर **वित्त वर्ष 2025-26 में 258.26 मिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया। यह वृद्धि भारतीय पुष्प उत्पादों की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय मांग और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में मजबूती को दर्शाती है।

भारत के शीर्ष वैश्विक निर्यात गंतव्य

वित्त वर्ष 2025-26 में भारत फूलों की खेती और बीजों की प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अच्छी मांग रही। **अमेरिका 45.94 मिलियन अमेरिकी डॉलर** के निर्यात के साथ शीर्ष गंतव्य के रूप में उभरा। इसके बाद फूलों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार के एक महत्वपूर्ण केन्द्र **नीदरलैंड** का स्थान रहा, जहां **42.18 मिलियन अमेरिकी डॉलर** के उत्पादों का निर्यात किया गया। **बांग्लादेश को 16.51 मिलियन अमेरिकी डॉलर** मूल्य की फूलों की खेती का निर्यात किया गया। वहीं, **संयुक्त अरब अमीरात** और **इटली** ने क्रमशः **16.35 मिलियन अमेरिकी डॉलर और 9.69 मिलियन अमेरिकी डॉलर** मूल्य के उत्पादों का आयात किया। यह भारत के फूलों की खेती के निर्यात की पारंपरिक और उभरते बाजारों में बढ़ती पहुंच को दर्शाता है।

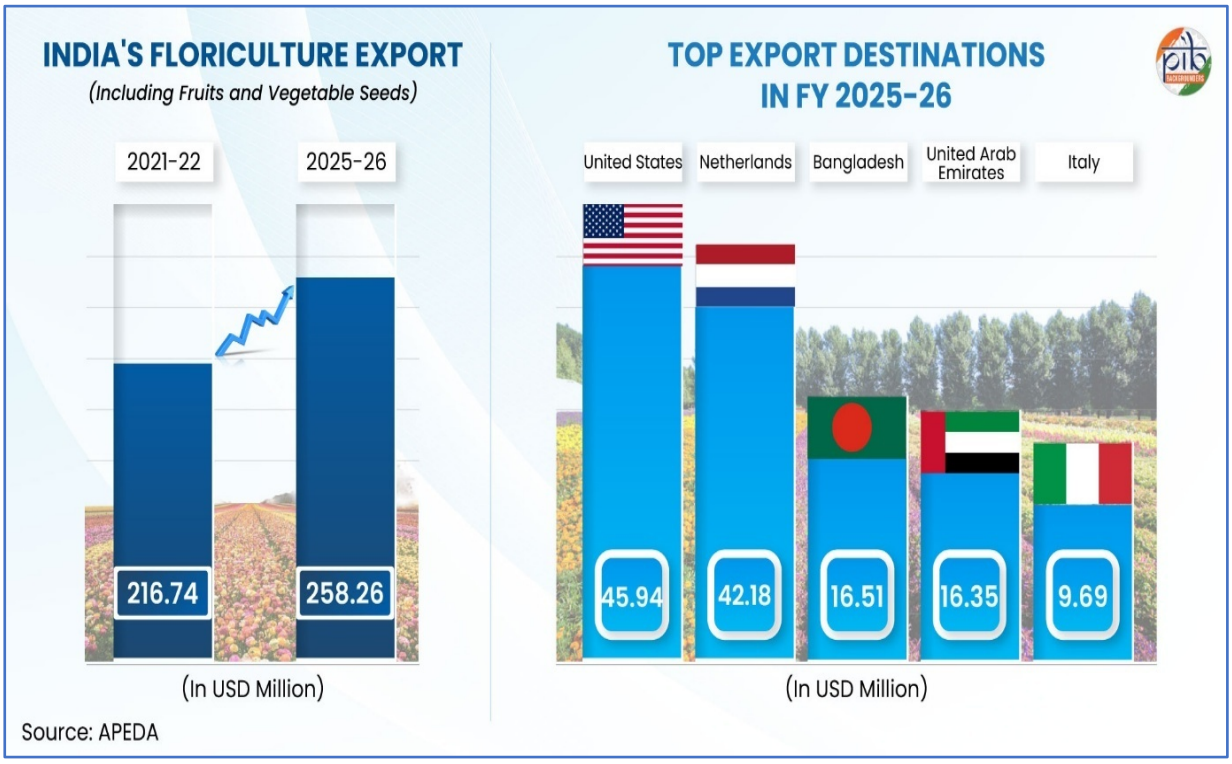

विविधतापूर्ण पुष्प निर्यात पोर्टफोलियो

यह निर्यात प्रदर्शन फूलों की खेती की विविध फसलों पर आधारित है, जिनका वैश्विक कटे हुए फूलों के व्यापार में महत्वपूर्ण व्यावसायिक स्थान है। भारत से निर्यात की जाने वाली प्रमुख फसलों में **गुलाब, कार्नेशन, गुलदाउदी, जरबेरा, ग्लैडियोलस, जिप्सोफिला, लिआट्रिस, नेरिन, ऑर्किड, एकिलिया, एन्थ्यूरियम, ट्यूलिप और लिली** शामिल हैं। इनके माध्यम से भारत दुनिया भर के विभिन्न बाजारों की पसंद और गुणवत्ता संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।

इसके अतिरिक्त, भारत से फूलों की खेती का निर्यात कई श्रेणियों में किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय बाजारों की जरूरतों को पूरा करती है:

- **ताजे कटे हुए फूलों** का मुख्य रूप से **यूरोप, जापान, ऑस्ट्रेलिया, पश्चिम एशिया और अमेरिका** को निर्यात किया जाता है।
- **खुले फूलों** की आपूर्ति मुख्य रूप से **खाड़ी क्षेत्र में प्रवासी भारतीय समुदायों** की जरूरतों को पूरा करने वाले बाजारों में की जाती है।
- **कटे हुए पत्तों** का निर्यात मुख्य रूप से **यूरोपीय देशों** को किया जाता है।
- **सूखे फूलों** का निर्यात **अमेरिका, यूरोप, जापान, ऑस्ट्रेलिया, सुदूर पूर्व और रूस** सहित अनेक देशों और क्षेत्रों में किया जाता है।
- **गमलों में लगाए जाने वाले** पौधों का निर्यात थोड़े से देशों तक सीमित है।

इन निर्यात श्रेणियों में, **सूखे फूलों की भारत की फूलों की कुल खेती के निर्यात में प्रमुख हिस्सेदारी** है, जिसका मुख्य कारण उनकी लंबी भंडारण अवधि और व्यापक बाजार पहुंच है।

पूर्वोत्तर से निर्यात में बड़ी उपलब्धि

फरवरी 2025 में, मिजोरम से सिंगापुर के लिए एंथुरियम फूलों की पहली खेप के निर्यात को हरी झंडी दिखाई गई। यह **भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र** से पुष्पकृषि उत्पादों के निर्यात की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस खेप में **1,024 कटे हुए एंथुरियम फूल** (70 किलोग्राम वजन) शामिल थे, जिन्हें 50 मजबूत गत्ते के डिब्बों में पैक किया गया था। इस पहल का नेतृत्व **कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा)** ने **मिजोरम सरकार** के बागवानी विभाग के सहयोग से किया। यह पहल क्षेत्र के फूल उत्पादकों के लिए नए अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जुड़ाव और उभरते व्यापारिक अवसरों को दर्शाती है।

नीतिगत सहयोग के माध्यम से विकास को बढ़ावा

सरकार ने देशभर में फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए कई विकासात्मक कार्यक्रम शुरू किए हैं। इन प्रयासों का मुख्य उद्देश्य उत्पादन, बुनियादी ढांचे, अनुसंधान, क्षमता निर्माण और निर्यात को सुगम बनाने पर केन्द्रित है।

सरकारी सहायता के प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं:

- **नीतिगत एवं संस्थागत सहायता** - विकास संबंधी पहलें मुख्य रूप से बागवानी के **समेकित विकास के लिए मिशन (एमआईडीएच)** के माध्यम से कार्यान्वित की जाती हैं। इसमें **राष्ट्रीय बागवानी मिशन (एनएचएम), पूर्वोत्तर एवं हिमालयी राज्यों के लिए बागवानी मिशन तथा राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड** शामिल हैं।

- **वित्तीय सहायता एवं ऋण सहयोग** - **राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)** किसानों को **संरक्षित खेती और परिशुद्ध कृषि** पद्धतियों को अपनाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जिससे उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार होता है।
- **बीज उत्पादन एवं रोपण सामग्री** - फूलों के बीजों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कई बीज कंपनियों ने प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्यों में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित की हैं। इससे गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है।
- **प्रोत्साहन एवं रियायतें**- फूलों की खेती के निर्यात को बढ़ावा देने और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए **बीजों, रोपण सामग्री, उपकरणों तथा हवाई मालभाड़े** पर रियायतें प्रदान की जाती हैं।
- **निर्यात संवर्धन** - निर्यात संबंधी सहायता **वाणिज्य मंत्रालय** के माध्यम से प्रदान की जाती है, जिसका **प्रमुख माध्यम कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा)** है।
- **प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण** - सरकार ने **किसानों और उद्यमियों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम** शुरू किए हैं। ये कार्यक्रम किसानों के तकनीकी कौशल को मजबूत करने, आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने तथा फूलों की खेती के क्षेत्र में उद्यम विकास को बढ़ावा देने में सहायक हैं।
- **अनुसंधान एवं विकास** - फूलों की खेती से संबंधित अनुसंधान **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)** के अंतर्गत आने वाले विभिन्न संस्थानों में किया जाता है। इसके अतिरिक्त, यह अनुसंधान **राज्य कृषि विश्वविद्यालयों** के बागवानी विभागों तथा **अखिल भारतीय समन्वित पुष्पकृषि सुधार परियोजना** के अंतर्गत भी किया जाता है।

इस क्षेत्र को नीतिगत समर्थन, वित्तीय सहायता और संस्थागत सहयोग का निरंतर लाभ मिल रहा है। बेहतर नीतिगत ढाँचे और लक्षित हस्तक्षेप पुष्पकृषि व्यापार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता को और अधिक बढ़ावा देंगे।

नवाचार को बढ़ावा: वैज्ञानिक अनुसंधान से उच्च-मूल्य वाली फूलों की खेती

फूलों की खेती के बढ़ते बाजारोन्मुखी स्वरूप के साथ, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति उत्पादकता, गुणवत्ता तथा उत्पादों के विविधीकरण में सुधार ला रही है।

सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने विज्ञान-आधारित पहलों के माध्यम से भारत के **पुष्प एवं सुगंध क्षेत्र** को सशक्त बनाने के लिए दो प्रमुख कार्यक्रम विकसित किए हैं।

- वर्ष 2021 में शुरू किए गए **सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन** का उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि करना, उद्यमिता को बढ़ावा देना तथा फूलों की खेती के उद्योग में प्रौद्योगिकी-आधारित विकास को प्रोत्साहित करना है।
    - दिसम्बर 2025 तक, इस मिशन के अंतर्गत **2,208 हेक्टेयर** से अधिक भूमि को फूलों की खेती के तहत लाया जा चुका है।
    - इससे देश के **26 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के 399 क्लस्टरों में 16,220 व्यक्तियों** को लाभ हुआ है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत उद्यमियों को अनेक प्रौद्योगिकियाँ विकसित करके हस्तांतरित भी की गई हैं तथा कई प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण संबंधी पहलें भी संचालित की गई हैं।

- **वर्ष 2017** में शुरू किया गया **सीएसआईआर अरोमा मिशन** सुगंधित फसलों की खेती और प्रसंस्करण के माध्यम से ग्रामीण आजीविका में सुधार लाने पर केन्द्रित है। ये फसलें सुगंध एवं आवश्यक तेल उद्योग के लिए गुणवत्तापूर्ण कच्चा माल उपलब्ध कराती हैं।
    - दिसम्बर 2025 तक, सुगंधित फसलों की खेती का विस्तार **51,000 हेक्टेयर से अधिक** क्षेत्र में हो चुका था।
    - इस मिशन के अंतर्गत **28 राज्यों में 4,500 से अधिक अरोमा क्लस्टर** स्थापित किए गए थे, जिनमें **जनजातीय क्षेत्रों के 20 क्लस्टर** भी शामिल हैं।
    - मिशन में कौशल विकास को प्राथमिकता दी गई। इसके तहत **2,096 प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रमों** के माध्यम से **1.22 लाख लोगों** को प्रशिक्षित किया गया। इनमें **10,000 महिलाएँ** शामिल थीं। साथ ही, मूल्यवर्धित उत्पादों के विकास में **110 से अधिक उद्यमियों** को सहायता प्रदान की गई।
    - इन सभी पहलों के परिणामस्वरूप लगभग **1 करोड़ ग्रामीण रोजगार के अवसर** सृजित हुए और **6,000 टन से अधिक आवश्यक तेलों** का उत्पादन संभव हुआ। लगभग **600 करोड़ रुपये मूल्य** के इस उत्पादन ने सुगंध एवं इससे जुड़े उद्योगों को महत्वपूर्ण कच्चा माल उपलब्ध कराया।

ये अनुसंधान संबंधी पहलें भारत के फूलों की खेती के क्षेत्र को सशक्त बनाने में वैज्ञानिक सहयोग के महत्व को रेखांकित करती हैं।

प्रयोगशाला से खेतों तक: भारत के विदेशी फूलों की गाथा

हिमालय में ट्यूलिप: संभावनाओं का एक उद्यान

हिमालयी क्षेत्र (पालमपुर) में, **सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएचबीटी)** के पुष्पकृषि मिशन के अंतर्गत किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान ने प्राकृतिक जलवायु संबंधी लाभ को एक संरचित फूलों की खेती के अवसर में बदलने में मदद की है। ठंडे तापमान और उपयुक्त कृषि-पारिस्थितिक परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए, अनुसंधान-आधारित पहलों के माध्यम से ट्यूलिप की खेती को प्रोत्साहित किया गया है।

इस दिशा में किए गए कार्यों में **रोपण सामग्री का चयन, पुष्पन चक्र तथा फसल प्रबंधन पद्धतियों** पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप ट्यूलिप की सफल खेती संभव हुई है। साथ ही, प्रीमियम सजावटी फूलों के क्षेत्र में इस क्षेत्र की स्थिति भी मजबूत हुई है। मई 2026 तक, पालमपुर स्थित ट्यूलिप गार्डन में 1.5 लाख से अधिक पर्यटक आए, जो पुष्पकृषि-आधारित पर्यटन को बढ़ावा देने की इसकी क्षमता को दर्शाता है।

हिमालयी ट्यूलिप पहल दर्शाती है कि लक्षित तकनीकी हस्तक्षेपों के माध्यम से फसल विविधीकरण को किस प्रकार बढ़ावा दिया जा सकता है। यह उच्च-मूल्य वाली पुष्पकृषि में क्षेत्रीय विशेषज्ञता को मजबूत करने की संभावनाओं को भी उजागर करती है।



हिमाचल प्रदेश के पालमपुर स्थित सीएसआईआर-आईएचबीटी का ट्यूलिप गार्डन

ओडिशा में यूस्टोमा: आशा की एक नई किरण

ठंडे हिमालयी परिवेश से अलग, **सीएसआईआर** की एक अन्य प्रयोगशाला ने पुष्पकृषि के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचा है। **ओडिशा (संबलपुर)** के कुछ हिस्सों में **यूस्टोमा** की सफल खेती गैर-पारंपरिक जलवायु परिस्थितियों में विदेशी फूलों को उगाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। पहले इस फसल को गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों के लिए अनुपयुक्त माना जाता था, लेकिन तापमान प्रबंधन, रोग नियंत्रण और खेती की उपयुक्त पद्धतियों पर वैज्ञानिक मार्गदर्शन के माध्यम से इसकी सफल खेती की गई। इस उपलब्धि ने प्रदर्शित किया कि **नवाचार जलवायु संबंधी बाधाओं** को दूर कर सकता है और **किसानों के लिए आय के नए अवसर खोल** सकता है। ओडिशा का यह अनुभव दर्शाता है कि **विज्ञान-आधारित खेती** किस प्रकार किसानों को **उच्च-मूल्य वाले बाजारों** से जोड़ सकती है।



ओडिशा में यूस्टोमा का पहला फूल खिलते हुए

पालमपुर के ट्यूलिप के खेतों में घूमने वाले या संबलपुर में यूस्टोमा के हल्के रंगों वाले खूबसूरत फूलों को निहारने वाले पर्यटकों के लिए यह अनुभव केवल दृश्य सौंदर्य तक ही सीमित नहीं है। यह प्रयोगशाला में अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक स्तर पर खेतों में सफलता में बदलने की एक शांत, किंतु प्रभावशाली परिवर्तनकारी यात्रा का प्रतीक है। यहाँ नवाचार जड़ें जमा रहा है और भारत के निरंतर विकसित होती फूलों की खेती के प्राकृतिक दृश्य को सशक्त बना रहा है।

निरंतर विकास की ओर अग्रसर एक क्षेत्र

भारत का फूलों की खेती का क्षेत्र बागवानी के एक सीमित क्षेत्र से आगे बढ़कर एक **विविधतापूर्ण और व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण कृषि गतिविधि** के रूप में विकसित हुआ है। इसकी विकास यात्रा देश की समृद्ध कृषि-जलवायु विविधता, घरेलू मांग में वृद्धि, मजबूत होते बाजार संपर्कों और निर्यात के बढ़ते अवसरों पर आधारित है। इस क्षेत्र का भविष्य **खेती से आगे बढ़कर मूल्य संवर्धन** पर केन्द्रित है।

संरक्षित खेती, परिशुद्ध कृषि प्रौद्योगिकियों, उन्नत रोपण सामग्री, कटाई के बाद प्रबंधन तथा गुणवत्ता मानकों को व्यापक रूप से अपनाने से उत्पादकता और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत किया जा सकता है। निरंतर नीतिगत समर्थन, सशक्त संस्थागत व्यवस्था और बेहतर बाजार संपर्कों के माध्यम से फूलों की खेती **किसानों की आय, ग्रामीण उद्यमों और कृषि निर्यात** को बढ़ावा दे सकती है।

पारंपरिक फूलों से लेकर विदेशी किस्मों और मूल्यवर्धित उपयोगों तक, इस क्षेत्र का बढ़ता विस्तार क्षेत्रीय विशेषज्ञता और नए उद्यमशील अवसरों के द्वार भी खोलता है। जैसे-जैसे भारत एक अधिक विविधतापूर्ण और प्रौद्योगिकी-सक्षम कृषि अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहा है, **फूलों की खेती के भविष्य में मूल्य और आजीविका, दोनों को बढ़ाने की संभावना है– "एक-एक फूल के ज़रिए"।**

संदर्भ

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय

https://www.csir.res.in/en/csir-science-stories/indias-exotic-flower-revolution#:~:text=Eustoma's%20success%20proves%20that%20India's,of%20400%20farmer%20clusters%20nationwide.&text=By%20connecting%20Himalayan%20farmers%20with,flowering%20of%20India's%20scientific%20spirit.
https://epubs.icar.org.in/index.php/IndHort/article/view/160122/57269
https://megagriculture.gov.in/PUBLIC/floriculture_default.aspx
https://purulia.gov.in/horticulture/
https://agriwelfare.gov.in/hort-state-level
https://ccsniam.gov.in/img/saraswati_Finalreport.pdf

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

https://apeda.gov.in/Floriculture
https://apeda.gov.in/FloricultureAndSeeds
https://agriexchange.apeda.gov.in/
https://www.investindia.gov.in/blogs/indian-floriculture-sunrise-sector
https://www.ibef.org/research/case-study/india-s-floriculture-sector-blooming-with-export-potential-and-rural-prosperity
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2113965&reg=3&lang=2

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2198763&reg=3&lang=2
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2266281&reg=48&lang=2

शिक्षा मंत्रालय

https://cbseacademic.nic.in/ecbse/pdfs/Basic%20Horticulture-I%20%28SH%29%20-%20XI.pdf

https://ncert.nic.in/vocational/pdf/kegr101.pdf

पीआईबी बैकग्राउंडर

https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?ModuleId=3&NoteId=155126&id=155126&reg=48&lang=2

पीआईबी शोध

पीके/केसी/आरसी/केपी